E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54
November 2021 Special Issue 03 Vol. IV

32

'गिलिगडु' उपन्यास में अभिव्यक्त वृध्द विमर्श

डॉ. वैशाली विट्ठल खेडकर
सहायक अध्यापक
महात्मा फुले महाविद्यालय, पिंपरी, पुणे.
मो.नं. 9822880790 ई-मेल - vaishu.khedkan@gmail.com

चित्रा मुदगल हिंदी साहित्य की सुप्रतिष्ठित रचनाकार है। उनका संपूर्ण साहित्य मानवता एवं समानता का पक्षधर रहा है। उनके साहित्य में आम जन की कथा-व्यथा अभिव्यक्त हुई है। समाज में स्थित सभी समस्याओं पर उन्होंने कलम चलायी है। उनके साहित्य में आम आदमी की आवाज मुखर हुई है। वे स्त्री सशक्तता की पक्षधर रही है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में चल रहे स्त्री संघर्ष को उन्होंने मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है। लेखिका की कलम से स्त्री जीवन का कोई पहलू अछूता नहीं रहा है। लेकिन वे प्रखर स्त्रीवादी कथाकार नहीं है, और ना ही उनका साहित्य केवल स्त्री को सम्मुख रखकर लिखा गया है। वे मानवतावादी कथाकार है। अतः सभ्य एवं स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए उनका साहित्य समर्पित है। चित्रा मुदगल ऐसी कथाकार है, जिनकी रचनाओं में विषय विविधता की भरमार है। उनकी पैनी दृष्टि से समाज का कोई कोना अछूता नहीं रहा है। 'एक जमीन अपनी,''आवां','पोस्ट बोक्स नं.203 नालासोपारा' आदि उपन्यासों से लेखिका ने अपनी अलग पहचान बनाई है। 'एक जमीन अपनी' एवं 'आवां' उपन्यास के माध्यम से स्त्री विमर्ष एवं श्रमिक जीवन संघर्ष की अभिव्यक्ति की तो 'पोस्ट बोक्स नं. 203 नालासोपारा' उपन्यास में युगों-युगों से प्रताड़ित किन्नर जीवन का यथार्थ वर्णन हुआ है। लेखिका ने वृध्द जीवन की समस्याओं को भी कलम से उकेरा है। यह साहित्य में अछूता विषय रहा है, हालांकि कुछ रचनाएं अवष्य मिलती है। इसमें 'समय सरगम'(कृष्णा सोबती),'अरण्य'(निर्मल वर्मा) आदि महत्वपूर्ण है। लेखिका ने 'गिलिगडु' जैसा उपन्यास रचकर वृध्द जीवन की समस्याओं का लेखा जोखा प्रस्तुत किया है।

'गिलिगडु' उप-यास सन 2002 में प्रकाशित हुआ है। यह लेखिका का तीसरा एवं सबसे लघु उपन्यास है। यह आकार में छोटा किंतु गहरी संवेदनशीलता से भरा है। इसमें दो बुजुर्गों की कथा अभिव्यक्त हुई है। हिंदी साहित्य में वृध्द विमर्श का यह अनूठा उपन्यास है। इसमें टूटते-बिखरते मानवीय मूल्यों की ओर निर्देश किया है। लेखिका ने वृध्द लोगों की समस्याओं के साथ ही सम सामायिक संदर्भों पर भी कलम चलाई है। वैसे भी वर्तमान अर्थ केंद्रित व्यवस्था में रिश्तों की अहमियत कम हो गई है। संयुक्त परिवार की संकल्पना टूट चूकी है। अति आधुनिकता में पल रही पीढ़ी अपने पारिवारिक दायित्वों को नजरअंदाज कर रही है। यह समस्या गांव की तुलना में महानगरीय सभ्यता में अधिक है। अब धीरे-धीरे गांव से शहर की ओर बढ़ रहे युवाओं की मानसिकता भी इससे प्रभावित हो रही है। लेखिका ने इस बदलती मनोदशा का मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में किया है।

जसवंत सिंह एवं कर्नल स्वामी महज प्रतिनिधि पात्र है। अब तो हर घर के बुजुर्गों की स्थिति एक जैसी हो गयी है। ये दोनों भी मित्र आर्थिक दृष्टि से सक्षम है। अच्छे ओहदे से रिटायर्ड हुए है। दोनों को भी पेंशन मिल रही है। बावजूद दोनों की भी जिंदगी अकेलेपन और अपमान से भरी पड़ी है। बुढ़ापे में जिनकी कोई आर्थिक आमदनी नहीं उनकी स्थिति अकल्पनीय है। इन्हें घर बाहर कोई भी स्वीकार नहीं करता। यह बूढ़े लोग ही एक दूसरे के सच्चे साथी होते हैं। एक दूसरे के सुख-दुख में सहयोगी होते है। मगर इनकी खुशी परिवार या अन्य सदस्यों से देखी नहीं जाती। जसवंत सिंह जिस सोसाइटी में रहते हैं, उनके आने से पहले सभी बुजुर्ग इकट्ठा होकर लाफिंग क्लब चलाते थे। इसमें कला, विहार, मानस, निर्माण, वर्धमान, समाचार, कीर्ति आदि में रहनेवाले सदस्य उत्साह, उमंग से सहभागी होते थे। दो-ढाई महिने तक यह क्लब जोर शोर से चलता है, मगर सुबह सैर करनेवालों युवाओं को इनकी हँसी बर्दाश्त नहीं होती। जैसे, ''पार्क में सुबह की सैर करनेवाले जवानों को लटक रही खालों और बत्तीसी वाले बूढ़ों की राक्षसी हा, हा, हा बर्दाश्त नहीं हुई। मनहूसियत कब तक झेलते ? विरोध शुरू हो गया। हँसना है तो जाकर अपने घरों में हँसो पार्क सार्वजनिक स्थल है। कल यहां समवेत स्वर में वे रोना आरंभ कर देंगे कि रोना सेहत के लिए फायदेमंद है कैसे कहा जा सकता है? बूढ़े डर गए। अगली सुबह वे मिले जरूर लेकिन हँसे नहीं।''यह वर्तमान सच्चाई है। कुछ पल का हँसना

MAHATMA PHULE MAHAVIDYALAYA PIMPRI PUNE-17